

॥ दोहा ॥

जयकाली कलिमलहरण, महिमा अगम अपार ।  
महिष मर्दिनी कालिका , देहु अभय अपार ॥

॥ चौपाई ॥

रि मद मान मिटावन हारी । मुण्डमाल गल सोहत प्यारी ॥  
अष्टभुजी सुखदायक माता । दुष्टदलन जग में विख्याता ॥  
भाल विशाल मुकुट छवि छाजै । कर में शीश शत्रु का साजै ॥  
दूजे हाथ लिए मधु प्याला । हाथ तीसरे सोहत भाला ॥1॥

चौथे खप्पर खड्ग कर पांचे । छठे त्रिशूल शत्रु बल जांचे ॥  
सप्तम करदमकत असि प्यारी । शोभा अद्भुत मात तुम्हारी ॥  
अष्टम कर भक्तन वर दाता । जग मनहरण रूप ये माता ॥  
भक्तन में अनुरक्त भवानी । निशदिन रटें ऋषी-मुनि ज्ञानी ॥2॥

महशक्ति अति प्रबल पुनीता । तू ही काली तू ही सीता ॥  
पतित तारिणी हे जग पालक । कल्याणी पापी कुल घालक ॥  
शेष सुरेश न पावत पारा । गौरी रूप धर्यो इक बारा ॥  
तुम समान दाता नहिं दूजा । विधिवत करें भक्तजन पूजा ॥3॥

रूप भयंकर जब तुम धारा । दुष्टदलन कीन्हेहु संहारा ॥  
नाम अनेकन मात तुम्हारे । भक्तजनों के संकट टारे ॥  
कलि के कष्ट कलेशन हरनी । भव भय मोचन मंगल करनी ॥  
महिमा अगम वेद यश गावैं । नारद शारद पार न पावैं ॥4॥

भू पर भार बढ्यौ जब भारी । तब तब तुम प्रकटीं महतारी ॥  
आदि अनादि अभय वरदाता । विश्वविदित भव संकट त्राता ॥  
कुसमय नाम तुम्हारौ लीन्हा । उसको सदा अभय वर दीन्हा ॥  
ध्यान धरें श्रुति शेष सुरेशा । काल रूप लखि तुमरो भेषा ॥5॥

कलुआ भैरों संग तुम्हारे । अरि हित रूप भयानक धारे ॥  
सेवक लांगुर रहत अगारी । चौसठ जोगन आज्ञाकारी ॥  
त्रेता में रघुवर हित आई । दशकंधर की सैन नसाई ॥  
खेला रण का खेल निराला । भरा मांस-मज्जा से प्याला ॥6॥

रौद्र रूप लखि दानव भागे । कियौ गवन भवन निज त्यागे ॥  
तब ऐसौ तामस चढ़ आयो । स्वजन विजन को भेद भुलायो ॥  
ये बालक लखि शंकर आए । राह रोक चरनन में धाए ॥  
तब मुख जीभ निकर जो आई । यही रूप प्रचलित है माई ॥7॥

बाढ्यो महिषासुर मद भारी । पीड़ित किए सकल नर-नारी ॥  
करूण पुकार सुनी भक्तन की । पीर मिटावन हित जन-जन की ॥  
तब प्रगटीं निज सैन समेता । नाम पड़ा मां महिष विजेता ॥  
शुंभ निशुंभ हने छन माहीं । तुम सम जग दूसर कोउ नाहीं ॥8॥

मान मथनहारी खल दल के । सदा सहायक भक्त विकल के ॥  
दीन विहीन करैं नित सेवा । पावैं मनवांछित फल मेवा ॥

संकट में जो सुमिरन करहीं । उनके कष्ट मातु तुम हरहीं ॥  
प्रेम सहित जो कीरति गावैं । भव बन्धन सों मुक्ती पावैं ॥९॥

काली चालीसा जो पढ़हीं । स्वर्गलोक बिनु बंधन चढ़हीं ॥  
दया दृष्टि हेरौ जगदम्बा । केहि कारण मां कियौ विलम्बा ॥  
करहु मातु भक्तन रखवाली । जयति जयति काली कंकाली ॥  
सेवक दीन अनाथ अनारी । भक्तिभाव युति शरण तुम्हारी ॥१०॥

॥ दोहा ॥

प्रेम सहित जो करे, काली चालीसा पाठ ।  
तिनकी पूरन कामना, होय सकल जग ठाठ ॥